



॥ श्री कार्तिकेय चालीसा ॥
कार्तिकेय जी का स्मरण मन में साहस,
बुद्धि और आत्मविश्वास जगाता है।

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥श्री कार्तिकेय चालीसा ॥

॥दोहा॥

शौर्यवान शरवणभव, गौरी पुत्र गणेश।
स्कन्द कुमार कृपालु प्रभु, करो कृपा विशेष॥

॥चौपाई॥

जय जय जय कार्तिक स्वामी।
जय षडानन अंतर्यामी॥

रिद्धि सिद्धि के तुम हो दाता।
दीन जनों के भाग्य विधाता॥

शिव पार्वती के तुम प्यारे।
भक्त जनों के संकट टारे॥

मयूर वाहन रूप निराला।
हाथ शक्ति शोभित भाला॥

देव सेनापति तुम कहाए।
तारकासुर को मार गिराए॥

क्रौंच दैत्य संहारा कीन्हा।
देवों को फिर सुख सब दीन्हा॥

ज्ञान शक्ति के तुम अधिकारी।
सब विधि पूजत नर औ नारी॥

जो कोई तुमको ध्यावे।
मनवांछित फल वह पावे॥

बाल रूप अति मन को भाता।
भक्तों के दुख दूर भगाता॥

षण्मुख नाम तुम्हारा प्यारा।
जपे सदा जग यह संसारा॥

वल्ली देवसेना के स्वामी।
कृपा करो हे अंतर्यामी॥

भव भय हर लो हे भगवंता।
करो कृपा दयालु अनंता॥

शक्ति भक्ति दो सुखकारी।
हरो क्लेश भवभय भारी॥

जो यह चालीसा गावे।
रोग दोष सब दूर भगावे॥

पुत्र, विद्या, धन और माया।
सब पर होती आपकी छाया॥

कार्तिक मास विशेष तुम्हारा।
पूजे जगत सकल संसारा॥

चालीसा जो कोई नर गावे।
जीवन सुख समृद्धि पावे॥

॥दोहा॥

कार्तिकेय प्रभु कृपानिधि, सुन लो मेरी बात।
भक्ति भाव से जो जपे, पावे शुभ सौगात॥

